# युवा प्रभाग-दिव्य दर्पण ग्रुप
# नवम्बर, 08 मास के पुरुषार्थ की प्वाइंटस

नवम्बर मास का चार्ट: इस मास में हम विशेष मन्सा श्रेष्ठ स्थिति के द्वारा विश्व कल्याण की सेवा (योग के प्रयोग),और सम्पूर्ण निर्विकारी बनने का लक्ष्य रखेंगे।

बापदादा के महावाक्य है "अभी ऐसी मन्सा की शक्ति प्रत्यक्ष हो जैसे मुख का आवाज़ क्लीयर पहुँचता है ना ऐसे मन का आवाज़ धीरे-धीरे पहुँचता जाए, बाप आ गया। सिर्फ यह आवाज़ भी पहुँच गया तो ढूँढ़ने तो लगेंगे। फिर आपे ही पहुँचेंगे लेकिन यह मनोबल की सेवा अभी होनी चाहिए।.....ऐसे ग्रुप बनाओ जो इस मन्सा सेवा के रूचि वाले हो और इसकी रिहर्सल करते रहें।"

विधि :

इस मास में चार सप्ताह के लिए चार प्रकार की विश्व कल्याण की सेवा मन्सा श्रेष्ठ स्थिति द्वारा करेंगे और निम्नलिखित चार बातों में सम्पूर्ण निर्विकारी बनेंगे :

| सप्ताह | विश्व कल्याण की सेवा | शक्ति | स्वरूप | दिव्य दर्पण की मन्सा श्रेष्ठ स्थिति के प्रयोग | सम्पूर्ण निर्विकारी |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | प्रकृति की सेवा | पवित्रता | देवात्मा | रोज एक प्रकृति के तत्व को पावन बनाने के लिए पवित्रता के वायब्रेशन देना | कर्म की पवित्रता |
| दूसरा | भक्त आत्माओं की सेवा | स्नेह | पूज्य | किसी मन्दिर में जाकर भक्तों की भावना को पूर्ण करना | दृष्टि की पवित्रता |
| तीसरा | अशान्त आत्माओं की सेवा | शान्ति | शान्तिदूत | विश्व के गोले पर बैठकर अशान्त आत्माओं को शान्ति का दान दे | वाणी की पवित्रता |
| चौथा | भटकती हुई आत्माओं की सेवा | शक्ति | फरिश्ता | स्वयं की सन्तुष्टता की शक्ति के आधार पर उन आत्माओं को तृप्त करना | संकल्पों की पवित्रता |

❖ फ्रेमबुक में ऊपर चार पंक्तियों में निम्नलिखित बिन्दु लिखकर उसका परिणाम प्रतिदिन रात को सोने से पहले लिखें:

1.गुड मोर्निंग - 3.30
2.अमृतवेला - 3.30 से 4.45, बाबा के कमरे में
3.व्यायाम/पैदल - हाँ जी
4.ट्रैफिक कन्ट्रोल- 5
5.मुरली क्लास - क्लास में सुनी
6.अव्यक्त मुरली पढ़ी? - हाँ जी
7.स्वमान की स्मृति -बहुत अच्छी
8.मन्सा श्रेष्ठ स्थिति - 60%
9.सम्पूर्ण निर्विकारी रहें - 70%
10. **नुमा शाम का योग**- हाँ जी
**11**.गुड नाइट- 10.30

- विश्व कल्याण की सेवा – हम सबने विश्व को पावन बनाने का, विश्व का कल्याण करने का ठेका उठाया है। विश्व का कल्याण करने का जो परमात्मा पिता का कार्य है उसमें हम आत्माएं बाप की मददगार भुजाएं हैं। तो सारे दिन में चेक करना है कि कोई भी कार्य करते हमारी मन्सा द्वारा हमने विश्व सेवा का कार्य किया? उसके लिए विशेष अमृतवेले हम अभ्यास करेंगे उस शक्ति को बाबा से प्राप्त कर विश्व कल्याण की सेवा में लगायेंगे ।

  अमृतवेले का अभ्यास : अमृतवेले विशेष परमधाम निवासी बाबा के पास जाकर कुछ मिनट के लिए उस शक्ति का अनुभव करें जो दी गई है। उस शक्ति से भरपूर होकर फिर कुछ मिनट उस शक्ति को समस्त संसार में फैलायें।

- सम्पूर्ण निर्विकारी:–
  1. कर्म की पवित्रता : जो भी कर्म हम करें वह आत्मअभिमानी स्थिति में स्थित होकर करें। हमारा हर कर्म श्रीमत के आधार पर हो। जो ईश्वरीय मर्यादाएं हमें बाबा ने दी है उसका पालन हमें कर्मो में करना है। हमारे कर्मो से सभी को सुख मिले यही प्रत्यक्ष प्रमाण है पवित्र कर्म का, तो चेक करे हमारे कर्म कितने % पवित्र हुए।
  2. दृष्टि की पवित्रता : हम आत्मा भाई-भाई है यह स्मृति सदैव रहे इसका अभ्यास करना है। भक्तों को नज़र से निहाल करने के लिए हमारे नयन रुहानियत से भरपूर हो। हमारे भक्तों की सर्व मनोकामनाएं हम अपनी दृष्टि से पूर्ण करें।

हमारी दृष्टि  सर्व आत्माओं के प्रति करुणा, दया, स्नेह, क्षमा से भरपूर हो, तो चेक करें कि कितने % हमारी दृष्टि पवित्र रही।

3. वाणी की पवित्रता : हमारी वाणी वरदान का भी अनुभव करा सकती है तो श्राप का भी करा सकती है, शान्ति का भी तो अशान्ति का भी कराती है, स्वमान में भी किसी को स्थित कर सकती है तो अपमान का एहसास करा सकती है, किसी में आशा भी पैदा करा सकती है तो निराशा का भी अनुभव भी करा सकती है। यह चेक हमें करना है कि कितने % हमारी वाणी पवित्र रही।
4. संकल्पों की पवित्रता : हमारे संकल्प शुभ भावना और शुभ कामनाओं से भरपूर हो। किसी भी आत्मा के लिए अपवित्र, अकल्याणकारी भाव न हो। संकल्प से भी हम किसी को दु:ख न पहुँचाये। स्वयं के लिए या अन्य के लिए केवल शुद्ध और श्रेष्ठ संकल्प हो, तो चेक करें कि कितने % हमारे संकल्प पवित्र रहे।

❖ दिव्य दर्पण की मन्सा श्रेष्ठ स्थिति के प्रयोग जो प्वाइन्टस लिखी हैं उसके अभ्यास के साथ-साथ  फ्रेम बुक में आज की मुरली के पश्चात् कम से कम 21 बार आज के स्वमान लिखना है:

स्वमान:

| | |
|---|---|
| **देवात्मा:** | 16. मैं आत्मा शान्ति प्रिय हूं। |
| 1. मैं आत्मा परम पवित्र हूं। | 17. मैं आत्मा शान्तचित्त हूं। |
| 2. मैं आत्मा पवित्रता का अवतार हूं। | 18. मैं आत्मा शान्ति का अवतार हूं। |
| 3. मैं  आत्मा पवित्रता का सूर्य  हूं। | 19. मैं आत्मा शान्ति का सितारा हूं। |
| 4. मैं आत्मा पवित्रता की मणि हूं। | 20. मुझ आत्मा का स्वधर्म शान्ति है। |
| 5. मैं आत्मा पवित्रता की देवी हूं। | 21. मैं आत्मा शान्तिधाम की निवासी हूं। |
| 6. मैं आत्मा पवित्र ताजधारी हूं । | **फरिश्ता स्वरूप:** |
| 7  मैं आत्मा कल्प पहले वाली देवात्मा हूं। | 22. मैं आत्मा मा. सर्व शक्तिवान हूं। |
| **पूज्य  स्वरूप:** | 23. मैं आत्मा पवित्रता का फरिश्ता हूं। |
| 8. मैं आत्मा पूजनीय हूं। | 24. मैं आत्मा सर्वशक्तियों से सम्पन्न हूं। |
| 9. मैं आत्मा प्रकृतिजीत हूं। | 25. मैं आत्मा स्नेह का फरिश्ता हूं। |
| 10. मैं आत्मा पूर्वज हूं। | 26. मैं आत्मा पवित्रता का फरिश्ता हूं। |
| 11. मैं आत्मा मायाजीत हूं। | 27. मैं आत्मा अर्श निवासी फरिश्ता हूं। |
| 12. मैं आत्मा सच्चे प्यार की मूरत हूं। | 28. मुझ आत्मा के सर्व रिश्ते एक बाबा से हैं |
| 13. मैं आत्मा पवित्रता की मूर्ति हूं। | 29 मैं सर्व शक्तिवान परमात्मा की छत्रछाया में हूं। |
| 14. मैं आत्मा चैतन्य मूर्ति हूं। | 30. मैं आत्मा सम्पूर्ण निर्विकारी हूं। |
| **शान्तिदूत :** | |
| 15. मैं आत्मा शान्तिदूत हूं। | |